अर्हम्

साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

29 अगस्त 2011

अन्तर्यात्रा का साधन है - मौन

- साध्वीश्री कनकश्रीजी

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वीश्री कनकश्रीजी ने पर्युषण प्रवचनमाला के अन्तर्गत मौन दिवस पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय को संबोधन प्रदान करते हुए कहा - मनुष्य के पास अनेक शक्तियां हैं, जिनमें एक है भाषा की शक्ति और प्रयोग। शक्ति का उपयोग विवेकपूर्वक होना चाहिए। जो परिमित, मृदु और सरस भाषा का प्रयोग करता है वह आदेय वचन होता है, प्रभावी होता है, सर्वमान्य होता है।

साध्वीश्रीजी ने भाषा प्रयोग के महत्त्वपूर्ण टिप्स बताते हुए कहा - बिना पूछे न बोलें, पूछने पर भी असत्य न बोलें, आवेश में न बोलें अयथार्थ न बोलें। वह व्यक्ति सबका प्रिय बनता है जो कम बोलता है और परिष्कृत भाषा बोलता है। साधवीश्री ने मौन के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा - एक निश्चित समय पर संकल्प पूर्वक किये गये मौन से ऊर्जा जागती है। अन्तर्यात्रा का साधन मौन की साधना ही है।

साध्वीश्रीजी ने श्रावक समाज को कर्तव्य बोध देते हुए अहं विसर्जन और विनम्रता के विकास की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा - संतता का सम्मान व्यक्ति के भीतर संतता के भाव पैदा करता है। चित्त की भूमि को समतल बनाने के लिए क्षमा, मुक्ति ऋजुता, मृदुता का अभ्यास जरूरी है। इनके अभाव में जीवन उपवन नहीं वन बन जाता है।

साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ उत्तर हाबड़ा महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। साध्वी मधुलेखा ने विषय का प्रतिपादन करते हुए कहा - मौन आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से उपयोगी है। भाषा का प्रयोग जीवन की हर प्रवृत्ति के साथ जुड़ा हुआ है लेकिन कब, कैसे और कितना बोलें, इसका ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मधुलता ने कहा - मौन से पूर्व धीरे बोलने का व कम बोलने का अभ्यास करें। 'नहीं बोल्यां नौ गुण' - कहावत के अनुसार मौन से व्यक्ति के भीतर अनेक विशिष्ट गुणों का विकास होता है। साध्वीश्री कनकश्रीजी की प्रेरणा से 140 भाई - बहिनों ने चक्रवर्ती व चन्दनबाला तेले के तप का आज समापन किया। अनेक तपस्वियों ने तप के प्रत्याख्यान किए। चातुर्मास व्यवस्था संयोजक श्री भंवरलालजी बैद ने तप का अनुमोदन किया। साउथ सभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र दूगड़ ने प्रतीक चिन्ह भेंटकर तपस्वियों का सम्मान किया।